RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-02
February -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

बीपीएल वर्ग के प्रतिभाशाली और सामान्य किशोर विद्यार्थियों की सामाजिक एवं शैक्षिक समस्याओं का एक अध्ययन

[1]राकेश कुमार, [2]डॉ. आभा सिंह

[1]पीएच.डी (शोधार्थी) शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, (मान्य विश्वविद्यालय) लाडनूँ ,राजस्थान।
[2]सहायक आचार्या, शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, (मान्य विश्वविद्यालय) लाडनूँ ,राजस्थान।

उद्देश्यः

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य ''बीपीएल वर्ग के प्रतिभाशाली और सामान्य किशोर विद्यार्थियों की सामाजिक एवं शैक्षिक समस्याओं का एक अध्ययन'' करना है। वर्तमान समय में बीपीएल वर्ग के प्रतिभाशाली और सामान्य किशोर विद्यार्थियों को अनेक सामाजिक एवं शैक्षिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं के अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा एक संक्षिप्त प्रयास किया गया हैं।

प्रस्तावनाः-

वर्तमान सामाजिक जटिलताओं का प्रभाव प्रतिभाशाली एवं सामान्य किशोर विद्यार्थियों पड़ रहा है। यही बालक जब किशोरावस्था में प्रवेश करते है, तो परिस्थितिवश उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। परिणामस्वरूप प्रतिभाशाली एवं सामान्य किशोर को अपनी सृजनात्मक शक्तियों के विकास में कई सामाजिक समस्याओं का सामना करता है। जब प्रतिभाशाली एवं सामान्य किशोर विद्यालयी जीवन में प्रवेश करते हैं तो उन्हें समाज, विद्यालय जीवन के विविध क्षेत्रों में असमायोजन का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में उनका आचरण समाज सम्मत न होकर समाज के प्रतिकूल हो जाता है।

एक राष्ट्र की उन्नति उसके प्रतिभाशाली एवं सामान्य किशोर विद्यार्थियों पर निर्भर है, जैसा कि सर्वविदित है कि आज का बालक देश का भावी नागरिक हैं। जिसे समाज ही पूर्ण रूप से तैयार करता है। इसलिए आवश्यक है कि हमारे भावी नागरिक योग्य, कुशल एवं आदर्श व्यक्तित्व लिए हो। किशोर विद्यार्थियों के ये सभी व्यावहारिक पक्ष तभी विकसित हो सकते है, जबकि वह जीवन की विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में स्वयं को समायोजित करने लायक वना सके।

वर्तमान समय में प्रतिभाशाली एवं सामान्य किशोर विद्यार्थी समाज के अन्य वर्गों से विकास में पिछड़ते जा रहे हैं। इसके परिणाम स्वरुप सामाजिक जटिलता इतनी अधिक होती जा रही है कि चारों ओर असंतोष छाया हुआ है। प्रतिभाशाली एवं सामान्य किशोर विद्यार्थियों को समाज और आर्थिक पिछड़ेपन का सामना करना पड़ता है। परिणाम स्वरुप ये लोग राष्ट्रीय धारा से पूरी तरह से मिल नहीं पाये है। और समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में असमर्थ रहे हैं। इनके कमजोर सामाजिक स्तर की संविधान निर्माताओं को पूरी जानकारी थी। और इन्हें सामाजिक न्याय दिलाने के लिये संविधान में विशेष प्रावधान किये गये है।

प्रतिभाशाली और सामान्य किशोर विद्यार्थियों की सामाजिक समस्याएँ :-

वर्तमान परिस्थिति के कारण आज का बीपीएल वर्ग का विद्यार्थी बड़ा ही असमंजस में है। उसकी सामाजिक समस्याएँ क्या है? इससे शिक्षा तथा समाज पर क्या प्रभाव पड़ रहा है? एवं देश में व्याप्त साम्प्रदायिकता एवं पूँजीवाद किस सीमा तक उसके विभिन्न दृष्टिकोणों को प्रभावित कर रहे है, तथा इन नवीन परिस्थितियों में ये अपने आप को किस प्रकार समायोजित कर वे अपनी शिक्षा किस प्रकार से कर पाते है?

वास्तव में बीपीएल वर्ग के विद्यार्थियों की अपनी सरलता और अज्ञानता ही उनके लिये अभिशाप सिद्ध हुई है। इस वर्ग ने अपना नैतिक बल, साहस, विरोध और प्रत्याक्रमण की क्षमता समाप्त कर दी है। अपने ही क्षेत्र में उन्हें समाज के अन्य वर्गों के लोग ओछी नजरों से देखते है और मनुष्य में नीचे स्तर का समझते है। इन्ही सब बातों को ध्यान में रखते हुये यह आवश्यक हो जाता है कि प्रतिभाशाली एवं सामान्य विद्यार्थियों की शैक्षिक एवं सामाजिक समस्याओं का अध्ययन किया जाए।

सामान्यतः लोगों में यह अवधारणा पायी जाती है कि प्रतिभाशाली एवं सामान्य बीपीएल विद्यार्थियों का मानसिक स्तर अत्यन्त उच्च होता है। और वे समाज के विकास में अपना उचित एवं बड़ा योगदान दे पायेगें। इसका प्रमुख कारण सामाजिक समस्याओं के कारण पिछड़कर प्रतिभाशाली एवं सामान्य बालक विकास के मामले में पीछे रह जाते है।

उनके सामने दूसरा महत्त्वपूर्ण पहलू यह कि प्रतिभाशाली एवं सामान्य विद्यार्थियों के परिवारों में मूलभूत आवश्यकताओं की कमी पूरी नहीं हो पाती है। जिस कारण उनमें सृजनात्मक एवं स्व-प्रेरणा (आत्म-सम्प्रत्यय) का उचित विकास नहीं हो पाता क्योंकि इन साधनों के अभाव में बालक अपनी उचित सृजन क्षमता का पूर्ण रुप से उपयोग नहीं कर पाते है। प्रतिभाशाली एवं सामान्य विद्यार्थी जब अपने को समाज के अन्य व्यक्तियों या वर्गों से पिछड़ा पाते है तो वे अपने परम्परागत व्यवसाय कृषि,वन कार्य व खनन कार्यों को न चाहते हुये भी करने लगते है। इसके पीछे एक प्रमुख कारण है,उसका सामाजिक रुप से कमजोर होना।

प्रतिभाशाली एवं सामान्य विद्यार्थियों में सृजनात्मक एंव आत्म-सम्प्रत्यय को अगर सही ढ़ग से प्रशिक्षित व्यक्तियों द्वारा निखारा जाए तो वे अपने गुणों को अत्यन्त तीव्र रुप से विकसित कर अपने जीवन को क्रांतिमय बना सकते है। क्योंकि प्रतिभाशाली एवं सामान्य विद्यार्थियों में प्रतिभा, परिश्रम,

RRIJM 2015, All Rights Reserved

Scanned by CamScanner